अध्याय -12

सामाजिक वानिकी एवं पारि-पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद

सामाजिक वानिकी एवं पारि-पुनर्स्थापन केन्द्र की स्थापना उत्तर प्रदेश और उत्तरी बिहार के गांगेय मैदानों तथा मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में सामाजिक वानिकी एवं पारि-पुनर्स्थापन के क्षेत्र में व्यावसायिक विशिष्टता के पोषण एवं संवर्धन के उद्देश्य से 1992 में की गई थी। केन्द्र के उत्तरादायित्वों में निम्नीकृत पारितंत्रों के पुनर्स्थापन, सामाजिक, बागान एवं कृषि वानिकी में अनुसंधान एवं प्रदर्शन, बीज उत्पादन क्षेत्रों की पहचान एवं विकास, गुणवत्ता रोपण स्टॉक का उत्पादन और वन प्रजातियों के लिए रोपण तकनीकों के मानकीकरण करना शामिल है।

1999-2000 के दौरान पूरी की गई परियोजनायें

यू.एन.डी.पी. परियोजना :

यह परियोजना एक वर्ष के लिए बढ़ाई गयी (1999- 2000)

क्र०सं० : 1

परियोजना पहचान सं०	:	आई.एन.डी./92/038/ए/01/99
प्रधान अन्वेषक का नाम	:	बी. एस. मिश्रा
परियोजना का शीर्षक	:	निर्धनता में कमी लाना और गांवों का सामाजिक-आर्थिक उत्थान
परियोजना शुरू होने का वर्ष	:	1993-94
परियोजना लागत	:	रूपये 13.72 लाख

उद्देश्य :

(क) वनीकरण द्वारा उत्पादकता बढ़ाकर गांवों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को ऊंचा उठाना

(ख) भा.वा.अ.शि.प. अनुसंधान अवसंरचना को सशक्त बनाना।

अन्वेषणों का वैज्ञानिक महत्व :

लक्ष्य समूहों में प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन आयोजन वनीकरण कार्यक्रमों में अहम भूमिका अदा करते हैं और इसके द्वारा ग्रामीणों के आर्थिक स्तर में वृद्वि होती है।

परिणाम/उपलब्धियां :

इस परियोजना के अन्तर्गत दस गांवों यथा- झालवा, पीपलगांव, मन्देरी, असरौली, अकबरपुर, सल्लाहपुर, लोधीपुर, लालगंज, बरियारी, अम्बेडकरगांव, और कादिलपुर का चयन किया गया। उद्देश्यों को हासिल करने के लिए पैकेज विकसित किए गए। कानपुर, टिकरी, मानकपुर गोंडा, सोहलवा और वाराणसी में रोपण विधि और प्रबन्ध के संबंध में लक्ष्य समूहों यथा- किसानों, अध्यापकों, महिलाओं, वनविदों, गैर सरकारी संगठनों आदि के लिए प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम किए गए।

1999-2000 के दौरान जारी पुरानी परियोजनायें
विश्व बैंक परियोजना

क्र०सं० : 1

परियोजना पहचान सं० : सी.एस.एफ.ई.आर./फ्रीप-01

प्रधान अन्वेषक का नाम : डा. एस. बी. सिंह

परियोजना का शीर्षक : बंजरभूमि और कृषि वानिकी विकास।

परियोजना शुरू होने का वर्ष : 1995

समापन का लक्ष्य वर्ष : 2000

परियोजना लागत : रूपये 50.90 लाख

उद्देश्य :

(क) चयनित बंजरभूमि स्थलों के विकास के लिए प्रभावी वनीकरण मॉडल स्थापित करना

(ख) अत्यधिक दबावग्रस्त स्थलों पर लोगों की सहभागिता द्वारा फसल स्थापना के कानूनी, प्रशासनिक, सामाजिक और नीति पहलुओं की जांच करना।

अन्वेषणों का वैज्ञानिक महत्व :

स्थानीय मूल्य की प्रजातियों का चयन करके और पर्याप्त रोपण तकनीकों का विकास करके बंजरभूमि का वनीकरण।

परिणाम/उपलब्धियां :

जलाक्रान्त सोडीय स्थल के वनीकरण के लिए हन्डिया तहसील, इलाहाबाद के उपरडाह गांव में 3-6 महीने (अगस्त से जनवरी) जलाक्रान्त का अनुभव करके स्थल में चार मॉडल स्थापित किए गए। कुल ग्यारह पादप प्रजातियों- ऐकेशिया निलोटिका, ऐल्बिजिया लेबैक, ऐजैडिरैक्टा इंडिका, कैज्वारिना इक्विसिटिफोलिया,

डैल्बर्जिया सिस्सू, यूकेलिप्टस हाइब्रिड, यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस, होलोप्टीरिया इन्टग्रिफोलिया, प्रोसेपिस जूलीफ्लोरा, सीजियम कूमिनि और टर्मिनेलिया अर्जुना का रोपण किया गया ताकि इनकी उत्तरजीविता, ऊँचाई, घेरा और जैवमात्रा उत्पादन का अध्ययन किया जा सके। प्रेक्षण दर्शाते हैं कि टर्मिनेलिया अर्जुना, ऐकेशिया निलोटिका, यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस, प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा और डैल्बर्जिया सिस्सू, स्थल में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। स्थल की सतत उत्पादकता को देखने के लिए, भौतिक-रासायनिक मृदा गुणों, भू आवरण और मृदा वनस्पति पर विभिन्न पादप प्रजातियों और उपचारों के प्रभावों पर अध्ययन प्रगति पर हैं। रोपण गड्ढों में मृदा संशोधनों, जिप्सम तथा चावल भूसी स्व रोपित पौधों के चारों ओर उर्वरकों के उपयोग के साथ टीला रोपण उपयुक्त मॉडल हैं।

दाबग्रस्त स्थलों पर लोगों की सहभागिता द्वारा फसल स्थापना के कानूनी, प्रशासनिक, सामाजिक और नीति पहलुओं की जांच करने के लिए इलाहाबाद के दो गांवों (पावरी और साहीपुर) तथा सुल्तानपुर की अनेक भारतीय फार्म वानिकी समितियों में सर्वेक्षण किए गए। समिति के ग्रामीणों और सदस्यों, गैर-सदस्यों और कर्मचारियो के साथ सम्पन्न साक्षात्कार, पी.आर.ए. और विचार-विनिमय से ज्ञात हुआ है कि अनेक कारण/दबाव हैं जो बंजरभूमि के वनीकरण कार्यक्रम में लोगों को भाग लेने की अनुमति नहीं देते हैं। अध्ययन दर्शाते हैं कि भूमि और उपज के उपयोग पर नियंत्रण के अभाव जैसे कानूनी दबाव और मामलों के त्वरित निपटान के अभाव जैसे प्रशासनिक दबाव हैं।

क्र०सं० : 3

परियोजना पहचान सं० : सी.एस.एफ.ई.आर./फ्रीप-02

प्रधान अन्वेषक का नाम : श्रीमती मुकुन्द दुबे

परियोजना का शीर्षक : पर्यावरणीय पुनर्वास- विन्ध्य पहाडियां और गांगेय मैदान।

परियोजना शुरू होने का वर्ष : 1995

समापन का लक्ष्य वर्ष : 2000

परियोजना लागत : रूपये 72.80 लाख

उद्देश्य :

(क) विन्ध्य क्षेत्र और समीपवर्ती गांगेय मैदानों में पारिस्थितिकी एवं सामाजिक पारस्परिक क्रिया का अध्ययन करना

(ख) सतत शस्योत्पादन मॉडलों का विकास करना

(ग) स्थल उत्पादकता सुधारने में लोगों की सहभागिता प्रोत्साहित करने के लिए प्रदर्शन भूखण्डों की स्थापना करना।

अन्वेषणों का वैज्ञानिक महत्व :

विशिष्ट निम्नीकृत स्थलों के पुनर्वास के लिए उपयुक्त प्रजातियों का चयन और अकाष्ठ वन उत्पादों के सतत उपयोग उपलब्ध करके ग्रामीण निर्धनों का उत्थान।

परिणाम/उपलब्धियां :

साहित्य पुनरीक्षण, क्षेत्र सर्वेक्षण पूरा किया गया और इलाहाबाद के नजदीक गांगेय मैदानों में सभी तीन निम्नीकृत स्थलों, यथा- लवण प्रभावित भूमियां (पावरी), उपान्त कृषि भूमियां (काजू) और नमी दबाव स्थल (पुरानी छावनी), की पहचान की गई। विन्ध्य क्षेत्र में सिलिका खनित क्षेत्र के एक दूसरे निम्नीकृत स्थल (शंकरगढ़, इलाहाबाद) की भी पहचान की गई। सामाजिक-आर्थिक अध्ययनों के लिए चार गांवों, शंकरगढ़ में दो, उपान्त कृषक स्थल में एक और लवण प्रभावित स्थल में एक, का बेतरतीब चयन किया गया। पारिस्थितिकीय अध्ययन के लिए, निम्नीकृत स्थलों में वनस्पति सर्वेक्षण किया गया।

सामाजिक-आर्थिक पारस्परिक क्रिया और वनस्पति अध्ययनों के आधार पर, विशिष्ट स्थल के लिए उपयुक्त प्रजातियों का चयन किया गया तथा शंकरगढ़ के सिलिका खनित क्षेत्र में दो अनुसंधान मॉडलों, पावलोनिया का एक सूत्रपात परीक्षण और नमी दबाव स्थल में प्रजाति जांच परीक्षण का एक प्रदर्शन भूखण्ड स्थापित किया गया। निम्नीकृत स्थलों में स्थापित प्रयोगों के प्रेक्षण इस प्रकार हैं :-

(1) पावलोनिया सूत्रपात परीक्षण में, पावलोनिया की चार प्रजातियों यथा पी. फार्चूनी, पी. कावाकामी, पी. फार्गेसी, पी. टोमनटोसा में से रोपण के चार साल बाद वृद्धि और उत्तरजीविता में पी. फार्चूनी ने सर्वोत्तम निष्पादन किया। मृदा के स्तर में परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए मानक प्राचलों हेतु मृदा विश्लेषण भी किए गए। सांख्यिकीय विश्लेषण प्रगति पर हैं।

(2) वर्षा पर आधारित अवस्थाओं के अन्तर्गत नियंत्रण सहित विभिन्न पलवारों के चार उपचारों और दो प्रतिकृतियों में सात चयनित प्रजातियों, यथा- मधुका इंडिका, ऐजैडिरैक्टा इंडिका, पिथीसीलोबियम डल्से, प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा, पोंगेमिया पिनाटा और ऐकेशिया निलोटिका की वृद्धि अनुक्रिया का अध्ययन करने के लिए 1997 में शंकरगढ़ के सिलिका खनित क्षेत्र में एक अनुसंधान मॉडल स्थापित किया गया। वृद्धि आंकडों (औसत ऊँचाई और सी.सी.) का विश्लेषण किया जा रहा है।

(3) पांच प्रतिकृतियों में वर्षा पर आधारित अवस्थाओं के तहत ग्यारह प्रजातियों यथा- प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा, ऐकेशिया कैटेचू, पिथीसीलोबियम डल्से, केरिसा केरेन्डस, डैल्बर्जिया सिस्सू, फाइकस रीलीजिओसा, डेन्ड्रोकैलामस स्ट्रिक्टस, पोंगेमिया पिन्नाटा, जिजीफस मार्शियाना, एम्ब्लिका आफिसिनेलिस और ब्यूटीया मोनोस्पर्मा की वृद्धि अनुक्रिया का अध्ययन करने के लिए 1998 में सिलिका खनित क्षेत्र में दूसरा अनुसंधान मॉडल स्थापित किया गया। परिणाम

दर्शाते हैं कि डैल्बर्जिया सिस्सू, ऐकेशिया कैटेचू, पिथीसीलोबियम डल्से और प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

(4) ग्यारह प्रजातियों यथा- यूकेलिप्टस हाइब्रिड, यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस, ऐल्बिजिया लेबैक, डैल्बर्जिया सिस्सू, ऐजैडिरैक्टा इंडिका, ऐल्बिजिया प्रोसेरा, टर्मिनेलिया अर्जुना, पोंगेमिया पिन्नाटा, एम्ब्लिका आफिसिनेलिस टेमेरिन्डस इंडिका और सल्वाडोरा प्रजाति के साथ 1995 में नमी दबाव स्थल में एक प्रदर्शन भूखण्ड स्थापित किया गया। रोपण के चार वर्ष बाद डैल्बर्जिया सिस्सू, ऐजैडिरैक्टा इंडिका और टर्मिनेलिया अर्जुना ने अच्छा प्रदर्शन किया। सांख्यिकीय विश्लेषण प्रगति पर हैं।

क्र०सं० : 04

परियोजना पहचान सं० : सी.एस.एफ.ई.आर / फ्रीप- 03

प्रधान अन्वेषक का नाम : डा. नीरज पंत

परियोजना का शीर्षक : पारितंत्र की उत्पादकता।

परियोजना शुरू होने का वर्ष : 1995

समापन का लक्ष्य वर्ष : 2000

परियोजना लागत : रूपये 108.6 लाख

उद्देश्य :

(क) रोपणों/वन में पादप वृद्धि और उत्पादकता का मूल्यांकन करने के लिए विश्वसनीय विधि का विकास करना

(ख) विभिन्न स्थलों में पादप वृद्धि पर जैव-उर्वरकों विशेषकर माइकोराइजा के प्रभाव का निर्धारण करना।

अन्वेषणों का वैज्ञानिक महत्व :

पौध अवस्था में उपयुक्त जैव उर्वरकों के उपयोग पादप वृद्धि प्रेरित करके रोपणों में उत्पादकता में वृद्धि करते हैं। अनियमित आकार के वृक्षों (उदा०- ब्यूटीया मोनोस्पर्मा) के लिए उत्पादकता मूल्यांकन विधि के विकास विभिन्न उपचारों/निवेशों के प्रभाव का पता लगाने में सहायता करेंगे।

परिणाम/उपलब्धियां :

डैल्बर्जिया सिस्सू, ऐकेशिया निलोटिका और कैज्वारिना इक्विसिटिफोलिया के वृद्धि प्रदर्शन पर विभिन्न जैव उर्वरकों यथा- ग्लोमस इन्ट्राडिसीस, जाइगेस्पोरा मार्गेरिटा, राइजोबियम, एजोटोबैक्टर और पी.एस.एम. के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए पडिला पौधशाला में एक पात्र परीक्षण किया गया। सबसे उपयुक्त रोगाणुक पैकेज के निर्धारण के लिए रोगाणुक संरोप्य का अकेले में साथ ही साथ संयोजन में उपयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण प्रगति पर हैं।

अनियत क्वाड्रेट बनाकर ऊँचाई और वक्षोच्चता घेरों के लिए शंकरगढ़ वन के ब्यूटिया मोनोस्पर्मा को चिन्हित करके माप ली गई। पहचान किए गए नमूना वृक्षों की छंटाई के बाद विभिन्न प्राचलों के, उनकी उत्पादकता के साथ, सहसंबंध का अध्ययन किया जाएगा।

क्र०सं० : 05

परियोजना पहचान सं०	:	सी.एस.एफ.ई.आर./फ्रीप-04
प्रधान अन्वेषक का नाम	:	वी. के. सिंह
परियोजना का शीर्षक	:	रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम।
परियोजना शुरू होने का वर्ष	:	1995
समापन का लक्ष्य वर्ष	:	2000
परियोजना लागत	:	रूपये 124.30 लाख

उद्देश्य :

बीज उत्पादन क्षेत्रों का विकास, क्लोनीय बीजोद्यानों और पौध बीज उत्पादन क्षेत्रों की स्थापना।

अन्वेषणों का वैज्ञानिक महत्व :

गुणवत्ता रोपण स्टॉक उपलब्ध होगा जिससे कुल उत्पादकता में वृद्धि होगी।

परिणाम/उपलब्धियां :

(क) बीज उत्पादन क्षेत्रों का विकास :

लक्ष्य- 60 हैक्टेयर, हासिल-60 हैक्टेयर

डैल्बर्जिया सिस्सू के 300 हैक्टेयर क्षेत्र का सर्वेक्षण करने के बाद 70 हैक्टेयर क्षेत्र का चयन किया गया। सोहेलवा वन्य प्राणि वन प्रभाग में डैल्बर्जिया सिस्सू के 60 हैक्टेयर क्षेत्र में गणना की गई। सभी लक्ष्य क्षेत्रों में छंटाई पूरी की गई। बीज संग्रहण किया जा रहा है।

(ख) क्लोनीय बीज उद्यान की स्थापना :

लक्ष्य-3 हैक्टेयर, हासिल-3 हैक्टेयर

उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग सिल्वा साल क्षेत्र, हल्द्वानी के साथ मिलकर गंगापुर पटिया, लालकुंआ हल्द्वानी में डैल्बर्जिया सिस्सू के 3 हैक्टेयर क्लोनीय बीजोद्यान स्थापित किए गए। 6 मी. x 6 मी. के अन्तराल पर 30 क्लोनों का सूत्रपात किया गया। सभी क्लोन अच्छी प्रगति कर रहे हैं तथा उन्होंने उत्साहवर्द्धक ऊँचाई और आधारीय व्यास प्राप्त कर लिया है।

(ग) पौध बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना

लक्ष्य 30 हैक्टेयर, हासिल-30.5 हैक्टेयर

(डैल्बर्जिया सिस्सू-20 हैक्टे, ऐकेशिया निलोटिका-10.5 हैक्टे.) डैल्बर्जिया सिस्सू- 20 हैक्टेयर

उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग सिल्वा साल क्षेत्र हल्द्वानी और सिल्वा दक्षिण क्षेत्र कानपुर के साथ सहयोग करके 30.5 हैक्टेयर पौध बीज उत्पादन क्षेत्र (डैल्बर्जिया सिस्सू 20 हैक्टेयर और ऐकेशिया निलोटिका 10.5 हैक्टेयर) की स्थापना की गई। विभिन्न क्षेत्रों से डैल्बर्जिया सिस्सू और ऐकेशिया निलोटिका प्रत्येक के 40-40 कैन्डिडेट धन वृक्षों की पहचान और चयन किया गया। पड़िला अनुसंधान पौधशाला में पौधे उगाए गए। 5 मी. x 3 मी. के अन्तराल पर कैम्पियर गंज, गोरखपुर में 15 हैक्टेयर और गोरखपुर पटिया, लालकुआं और हल्द्वानी में 5 हैक्टेयर क्षेत्र में सफलतापूर्वक डैल्बर्जिया सिस्सू के रोपण किए गए। इसके अलावा, 5 मी. x 4 मी. के अन्तराल पर इटवा, मकन्दपुर गोंडा में 6 हैक्टेयर क्षेत्र में और हसनपुर, मेरठ में 2.0 हैक्टेयर क्षेत्र में तथा 5 मी. x 5 मी. के अन्तराल पर वृन्दावन मथुरा में 2.5 हैक्टेयर से अधिक क्षेत्र में ऐकेशिया निलोटिका स्थापित किया गया। सभी पौध बीज उत्पादन क्षेत्र अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

नाबार्ड परियोजना

क्र०सं० : 06

परियोजना पहचान सं०	:	सी.एस.एफ.ई.आर./नाबार्ड- 01
प्रधान अन्वेषक का नाम	:	महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.
परियोजना का शीर्षक	:	विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी मॉडलों का विकास।
परियोजना शुरू होने का वर्ष	:	1995
समापन का लक्ष्य वर्ष	:	2000
परियोजना लागत	:	रूपये 44.53 लाख

उद्देश्य :

इलाहाबाद के कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्र के लिए उपयुक्त वन संवर्धन-कृषि, वन संवर्धन-औद्यानिकी और वन संवर्धन- चारागाही मॉडलों का विकास करना।

अन्वेषणों का वैज्ञानिक महत्व :

विशिष्ट क्षेत्र के लिए कृषिवानिकी मॉडलों के उपयुक्त संयोजन उत्पादकता और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार करेंगे।

परिणाम/उपलब्धियां :

इलाहाबाद के आस-पास 20 कि.मी. की सीमा में तीन सूक्ष्म जलसंभरों यथा- भरेथा, बम्हरौली और भगवतपुर का चयन किया गया। इस क्षेत्र की उपान्त कृषि भूमियों के पुनर्वास के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकीय पैकेज विकसित किया गया।

गत वर्ष किसानों के खेतों में विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों यथा- वन संवर्धन- कृषि, वन संवर्धन- औद्यानिकी और वन संवर्धन ब्लाक मॉडलों के तहत 67,393 पादपों का रोपण किया गया। चालू वर्ष के दौरान, लगभग 6,228 पादपों का रोपण किया गया जिसमें से 2000 पौधे मृत पादपों की जगह लगाए गए और 2000 पौधों को असिंचित भूमि और बंजरभूमि में लगाया गया। सिंचाई सुविधा वाले किसानों में लगभग 2000 पौधों का वितरण किया गया। आंकड़े संकलित किए जा रहे हैं।

1999-2000 के दौरान शुरू की गई नयी परियोजनायें

कोई नहीं

विस्तार

प्रशिक्षण :

यू.एन.डी.पी. परियोजनान्तर्गत, बीज प्रौद्योगिकी, बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना के लिए कार्यपद्धति, रोग और नाशिकीट समस्यायें एवं उनका नियंत्रण, जैवउर्वरकों एवं आधुनिक पौधशाला तकनीकों के उपयोग पर एफ.टी.आई. (कानपुर); टिकरी एफ.आर.एच.(मानकपुर, गोंडा) और सोहलवा, एफ.आर.एच.(वाराणसी) में रेजरों, फॉरेस्टरों और गैर-सरकारी संगठनों के लक्ष्य समूहों के लिए प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया जिसमें क्रमशः 117, 65 और 52 लोगों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त, लालगंज गांव में भी प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम में किसानों महिलाओं तथा स्कूल अध्यापकों सहित 150 सहभागियों ने भाग लिया।

प्रदर्शनी, किसान मेला:

बाल-भवन इलाहाबाद में क्योर गैर सरकारी संगठन, जो पर्यावरणीय संरक्षण से संबंधित विभिन्न कार्यकलापों में सम्मिलित है, द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में इस केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कनिष्ठ अनु. अध्येता ने भाग लिया। वैज्ञानिकों ने स्थानीय निवासियों के समक्ष महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों की रोपण तकनीकों और पौधशाला रोपण स्टॉक में जड़ ट्रेनरों के उपयोग का प्रदर्शन किया।

इस केन्द्र ने स्थानीय माघ मेले में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। अन्य संगठनों, संस्थानों, राज्यों से सहानुबंध।

रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम के अनुसंधान कार्यकलापों को संबंधित क्षेत्र के उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग के साथ जोड़ा गया।

संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रकाशन एवं विस्तार साहित्य

- शीर्षक के साथ पुस्तिकायें
- उन्नत बीज
- बांस के बीज के एकत्रीकरण तथा भण्डारण विधि
- कृषि वानिकी
- कुछ बहु उपयोगी वृक्ष प्रजातियों पर टिप्पणी
- महत्वपूर्ण वृक्षों के हानिकारक कीट एवं उनका निदान
- मैथोडोलॉजी फॉर इस्टैबलिशमेन्ट ऑफ एस.पी.ए.।

वर्ष 1999-2000 के लिए वित्तीय विवरण

I योजना			
क्र.सं.	उप-शीर्ष		व्यय (रू० लाख में)
1.	क	राजस्व व्यय	
		1. अनुसंधान	24.93
		2. प्रशासनिक सहायता	11.42
		3. अन्य ब्योरा दें (एम.एस.)	0.24
		राजस्व व्यय 'क' का योग	36.59
	ख	ऋण और अग्रिम	
		(i) ऋण अग्रिम (वाहन)	0.53
		(ii) गृह निर्माण अग्रिम	-
		'ख' का योग	0.53
	ग	पूंजीगत व्यय	
		(i) भवन व सड़कें	-
		(ii) उपकरण, पुस्तकालय पुस्तकें	-
		(iii) वाहन	-
		(iv) अन्य विवरण दें	-
		'ग' का योग	-
		क+ख+ग (योजना) का कुल योग	37.12
II गैर-योजना			
1.	क	राजस्व व्यय	
		(i) अनुसंधान	-
		(ii) प्रशासनिक सहायता (वेतन)	-
		कुल योग गैर-योजना	-
		योजना+गैर-योजना का योग	37.12
III निधीयित परियोजना			
	क.	विश्व बैंक परियोजना	23.83
	ख.	यू.एन.डी.पी. परियोजना	0.70
	ग.	नाबार्ड परियोजना	1.59
	घ.	फार्टिप	-
	ङ	अन्य ब्योरा दें	-
	(क+ख+ग+घ+ङ) निधीयित परियोजना का कुल योग		26.12